भारतीय अम्बेडकरवादी
कहानी साहित्य

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

भारतीय अम्बेडकरवादी कहानी साहित्य

डॉ. पी. व्ही. महालिंगे

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

}kjk idkf'kr

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

भारतीय अम्बेडकरवादी कहानी साहित्य

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-68-0

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

नहीं • SAMPLE

भूमिका

'भारतीय अम्बेडकरवादी कहानी साहित्य' यह मेरी दलित साहित्य की दूसरी पुस्तक है। 'दलित आवधारणा एवं ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य' यह मेरी प्रथम पुस्तक है। इस विषय पर अध्ययन करते समय से ही मन में यह खयाल आया था कि भारत भर दलित कहानी के विषय क्या रहें होंगे? क्या दलित साहित्य की स्थिति महाराष्ट्र में मराठी साहित्य में और हिन्दी साहित्य में जिस प्रकार की है, उसी प्रकार की स्थिति पूरे देश के साहित्य में हैं? इसे जानने की उत्सुकता मन में थी। इसलिए मैंने अलग से सभी भारतीय भाषाओं में लिखी गई कहानियों को पढ़ता रहा, इन कहानियों के माध्यम से भारत के सभी दलितों के जीवन से जुड़ने का और उन्हें समझने का प्रयास करता रहा। उनकी पीड़ा, घुटन, दर्द, अन्याय, अत्याचार लगभग एक जैसा ही दिखाई देने लगता है। मतलब यह कि देश भर में दलितों पर अन्याय अत्याचार होता रहा लेकिन उनका मुक्तिदाता कोई भी नहीं हुआ। इतने बड़े देश में एक समाज दूसरे समाज पर हजारों वर्षों से अन्याय अत्याचार करता रहता है, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। भारत के दलितों के जीवन में परिवर्तन भारतीय संविधान के माध्यम से ही होता हुआ नजर आता है। परिणामस्वरूप दलितों को दलितत्व से मुक्ति दिलाने का काम इसी के माध्यम से होता हुआ नजर आता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि हजारों सालों से पीड़ित समाज को मुक्ति दिलाने का काम डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने किया है। यह बात स्पष्ट हो जाती है कि डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने भारतीय समाज को बेजोड़ संविधान देकर बहुत बड़ा उपकार किया हैं। अगर यह संविधान न होता तो दलित साहित्य भी नहीं होता और न दलित समाज आजाद होता। भारत को आजादी मिलने के बाद भी जो परंपरागत संविधान लागू किया जाता तो देश में किसी तरह का परिवर्तन नहीं हो पाता। इसलिए डॉ. अम्बेडकर भारतीय समाज के लिए एक मसींहा के रूप में सिद्ध होते हैं और आगे चलकर दलित

साहित्य के प्रेरणा स्रोत भी सिद्ध होते हैं। इन्हीं का प्रभाव मराठी दलित साहित्य पर सबसे पहले दृष्टिगोचर होता है। इन्हीं से प्रेरणा लेकर मराठी के लेखक लिखने लगते हैं।

मराठी दलित कहानियों में जो तीव्रता है वही कुछ मात्रा में हमें हिन्दी में भी देखने को मिलती है। यह सच है कि मराठी में सबसे पहले दलित कहानी का स्फोट हुआ और सारे भारत भर फैल गया। इसलिए धीरे–धीरे भारत की अन्य भाषा की कहानियों में भी हम दलित कहानी साहित्य का असर देखने को मिलता है। लेकिन जो गहराई हिन्दी और मराठी साहित्य में हैं, उतनी हम अन्य भाषा के साहित्य में नहीं देख पाते हैं। मैंने इस पुस्तक में भारत की सभी प्रमुख भाषा में लिखित कहानी साहित्य का अध्ययन कर उसमें चित्रित दलितों की स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है। प्रथम अध्याय में दलित साहित्य सिद्धांत एवं स्वरूप को उजागर किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में दलित साहित्य की स्थिति को स्पष्ट किया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी कहानी साहित्य में दलित जीवन को उजागर किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मराठी दलित कहानी में चित्रित दलित जीवन को उजागर किया गया हैं। पंचम अध्याय में गुजराती दलित कहानी साहित्य को उजागर किया गया है। छठे अध्याय में पंजाबी दलित कहानी साहित्य का चित्रण किया है। सातवें अध्याय में तेलगु दलित साहित्य का अध्ययन किया है। इन कहानियों को पढ़ने पर देश में दलितों की स्थिति को समझने में आसानी होगी। आशा है कि दलित साहित्य के पाठक एवं शोधार्थियों को यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

दलित साहित्य जिसे आज अंबेडकरवादी साहित्य कहना अधिक उचित लग रहा है। इसे समझने, पढ़ने में जिनका मार्गदर्शन, सहयोग मिलता रहा वे मेरे गुरु डॉ. विष्णु सरवदे मित्र संजय गडेराव, डॉ. अर्जुन खरात डॉ. प्रदीप वाघमारे, प्रा. ज्योति वाघमारे, डॉ. प्रज्ञा लोखंडे, प्रा. संजय घोड़के प्रा. अशोक कोळी मैं जिस महाविद्यालय में कार्यरत हूँ वह रामनारायण रुइया स्वायत्त महाविद्यालय माटुंगा, मुंबई की प्रभारी प्राचार्या डॉ. अनुश्री लोकुर मैडम इन सब का बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। जिनके सहयोग के बिना यह कार्य करना संभव नहीं था वह मेरी पत्नी संध्या और पुत्र साहिल का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे माता–पिता और भाई बहनों का भी हृदय से

आभार व्यक्त करता हूँ। अखंड पब्लिशिंग हाउस के वीरेंद्र कुमार यादव जी ने बहुत ही कम समय में पुस्तक को छापा इसलिए मनःपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ। अंत में जिनका प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग मिला हैं उन सब का पुनश्च मनःपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद!

डॉ. पी. व्ही. महालिंगे

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

विषय–सूची

	भूमिका	*v*
1.	दलित अवधारणा सिद्धांत एवं स्वरूप	1
2.	हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालखण्डों में दलित साहित्य की स्थिति	75
3.	हिन्दी कहानी साहित्य में दलित जीवन	164
4.	मराठी कहानी साहित्य	187
5.	गुजराती कहानी साहित्य	201
6.	पंजाबी दलित कहानी साहित्य	210
7.	तेलगु दलित कहानी साहित्य	219

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

1

nfyr vo/kkj.kk fl)kr ,oa Lo:i

1-1 nfyr 'kCn dk vFk ,oa Lo:i

आज हमारे देश के लगभग सभी भाषा के साहित्य में 'दलित' शब्द को लेकर काफी चर्चा हो रही हैं। विशेषतः मराठी साहित्य के अन्तर्गत इस दलित संज्ञा ने विशेष स्थान पाया है और उसका महत्वपूर्ण अंग बनी हुई है। आज तक यह संज्ञा एक ही अर्थ या स्वरूप में प्रयुक्त नहीं हुई है। अनेक शब्द कोषों में इस दलित शब्द का अर्थ दिया गया हैं, इस आधार पर दलित शब्द के अर्थ पर प्रकाश डाला जा सकता हैं।

nfyr – ''दला हुआ, खंडित, विदीर्ण, कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ।''[1]

nfyr& ''रौंदा, कुचला, दबाया हुआ, पादाक्रांत – हिन्दुओं में वे शूद्र जिन्हें अन्य जातियों के समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं।''[2]

nfyr –"Ground, Broken or reduced to"[3]

Depressed - "dispirited or miserable, psychological suffering from depression"[4]

"Depressed area – Suffering from economic depression"[5]

Depressed – "दलित वर्ग, दबा हुआ, निराश, खिन्न, उदास।''[6]

दलित शब्द के शब्द कोषों में समाविष्ट अर्थ के आशयनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि उन कुचले हुए, विदीर्ण, शोषितों के जीवन की यह दास्ता

TEST SAMPLE

हैं। जो प्राचीन हिन्दू संस्कृति से जुड़ी हुई है। हिन्दू सवर्णों के धार्मिक ग्रंथों में इनके लिए अलग–अलग शब्दों से पुकारा गया हैं। इनके धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से ही शोषित वर्ग या दासों का परिचय होता हैं। इन्हीं ग्रंथों के माध्यम से दलित शब्द को समझने में मदद होगी। हिन्दू संस्कृति आज तक सही सलामत और जीवित रहने का मूल कारण उनके धार्मिक ग्रंथ ही हैं। और ये सभी धार्मिक ग्रंथ हिन्दू समाज व्यवस्था के मुख्य अंग बने हुए हैं। वेदों, पुराणों, श्रुतियों, स्मृतियों, और मनुस्मृति में जो जीवन पद्धति बताई गई है, वह चार वर्णों के आधार पर टिकी हुई हैं। वे चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र हैं। इन्हीं वर्णों के आधार पर हिन्दू समाज व्यवस्था का निर्माण किया गया है और यह बताया गया है कि इस व्यवस्था का निर्माण कर्ता सामान्य मानव न होकर कोई ईश्वर है। इस तरह का गलत और झूठा विचार जान बूझकर लोगों के दिमाग में घुसाया गया, ताकि इस व्यवस्था का कोई विरोध न करें। आगे चलकर इस तत्व को हिन्दुओं के लगभग सभी धार्मिक ग्रंथों में बताया गया हैं। इसके साथ इन चार वर्णों के अपने–अपने काम भी बताये गये हैं। इस समाज व्यवस्था में सब से प्रमुख स्थान ब्राह्मण का है, जो ज्ञानार्जन का कार्य करता है। पढ़ने का अधिकार केवल इसी वर्ग को रहा हैं। दूसरे स्थान पर क्षत्रिय है, इनका काम रक्षा करना रहा हैं, तीसरा स्थान किसानों और वैश्यों का रहा हैं, और सबसे निम्न स्तर पर यानी पायदान पर है, वह शूद्र है, जो इस समाज की रीढ़ है, इनका शोषण कर, बहिष्कार करके इन्हें रौंदा, कुचला, मसला, और विदीर्ण करने का काम उपर्युक्त तीन वर्णों ने किया हैं। शूद्रों के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए? उन्हें कैसे सताना चाहिए? उन्हें कैसे सभी अधिकारों से वंचित रखा जाना चाहिए? और यहाँ तक कि खान–पान, रहन–सहन धन और पढ़ने के या ज्ञानार्जन करने के अधिकारों से दूर रहने के नियम 'मनुस्मृति' नामक ग्रंथ में बताए गए हैं। इस ग्रंथ के कारण शूद्रों पर अन्याय, अत्याचार के साथ–साथ बहुत सारे सामाजिक जीवन पर प्रतिबंध लगाए गए हैं। सोचने की बात यह है कि इतने सारे अन्याय कारक प्रतिबंध, नियम 'मनुस्मृति' में होने के बावजूद भी यह ग्रंथ हिन्दू वर्णव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। यह आश्चर्य की बात है।

'मनुस्मृति' के आधार पर बनी इस समाज व्यवस्था में सबसे अंतिम वर्ण जो चौथे स्थान पर है वही शूद्र है। इस समाज व्यवस्था में इस वर्ग को सबसे अधिक सताया गया, दबाया गया, कुचला गया, मसला गया, रौंद दिया गया

हैं। इनका आज तक जी भर कर संपूर्ण रूप से उच्च माने जाने वाले तीनों वर्णों ने मिलकर शोषण किया हैं। इनका सामाजिक स्तर जान बूझकर मुख्य प्रवाह के सवर्ण समाज के बराबर या ऊपर न उठे इसकी ओर ध्यान दिया गया हैं। उन्हें अपने पैरों तले रौंदकर उनके साथ कुत्ते, बिल्ली और अन्य पशु से भी बदत्र व्यवहार किया गया हैं। इसलिए ऐसे हिन्दुओं से सताए गए समाज को 'दलित' की संज्ञा से संबोधित किया जाता हैं।

अनादिकाल से जिनपर अन्याय, अत्याचार हुआ है, जिन्हें 'अछूत' के नाम से भी संबोधित किया गया हैं। 'नीच' माना गया है, जिनका शोषण हुआ है, ऐसी शूद्र जाति की पीड़ा को देखकर उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि डॉ. इकबाल ने एक स्थान पर कहा है –

''आह शूद्र के लिए हिन्दूस्ता गमखाना है
दर्दे इनसानी से इस बस्ती का दिल बेगाना है।''

प्राचीन कालीन सामाजिक वर्णव्यवस्था में दो प्रकार के शूद्र थे

1. अबहिष्कृत शूद्र और
2. बहिष्कृत शूद्र।

इन दोनों को भी सामाजिक जीवन में ऊपर उठने का मौका नहीं दिया गया, बल्कि ऊपर न उठे इसलिए उनपर बहुत सारे कठोर प्रतिबंध लगाये गए। इसलिए इनकी दुरावस्था अकथनीय है।

vcfg"Ñr 'kn

शूद्र में पहले प्रकार का शूद्र अबहिष्कृत है। ये वे शूद्र है जिन्हें अपने उद्धार का मार्ग ढूढ़ने का अधिकार है। ये शूद्र घरेलू काम करते थे, छोटे–मोटे व्यवसाय करते थे, कृषि करते थे, ध्यान देने की बात यह है कि, इनका छुआ जल अन्य सवर्णों को चलता था ये शूद्र मंदिर प्रवेश या रामायण, महाभारत या पुराण आदि कथाओं का श्रवण कर सकते थे। इन्हें ही आज अंग्रेजी में बैकवर्ड क्लासेस (OBC) कहा जाता है।

Ckfg"Ñr 'kn

इन शूद्रों को 'महाशूद्र' कहा जाता हैं। इनका जीवन सबसे अधिक दूरावस्था में बितता रहा हैं। इन्हें ही समाज की वेदी पर कुचल दिया गया

हैं। हिन्दू समाज इनकी परछाई से भी कोसों दूर रहा है। इनके साथ सबसे अधिक बुरा व्यवहार सवर्ण हिन्दूओं ने किया हैं। ''ऐसा कहा जाता है कि इन्होंने आर्यों से बहुत समय तक संघर्ष किया और जब ये परास्त हुए तब आर्यों ने इन्हें 'अस्पृश्य' करार दे दिया गया और इनको मरे हुए पशुओं को उठाने, मल उठाने, सफाई करने, कपड़ा धोने आदि निकृष्ट कार्य करने को विवश कर दिया गया।''[7] इन्हें ही आगे चलकर 'दलित' अस्पृश्य नाम से सम्बोधित किया जाने लगा और आज इनको ही अंग्रेजी में शेडयुल्ड कास्ट (S.C.) नाम से पहचाना जाता हैं।

प्राचीन भारत की समाज व्यवस्था में दास प्रथा का प्रचलन रहा है। ''ऋग्वेद में 'दास' और 'दस्यु' शब्द बहुत बार आये हैं। कुछ विदवानों का मानना हैं कि आर्य जातियों का पहला दस्ता भारत में 2000 ईसा पूर्व में आया था और यह आर्यों की ही एक जनजाति 'दास' थी। आरंभ में यह 'दास' शब्द सम्मान सूचक था। आर्यों के भारत आने पर जो जीता वह स्वामी और जो हारा वह 'दास'। इसी न्याय के कारण दासों की स्थिति पशुओं से भी बदत्तर हो गयी।''[8] अलग–अलग समय पर दासों के विविध प्रकार भी बताए जाते हैं 'दास' के स्वरूप से 'दलित' संज्ञा में निहित अर्थ व्यंजित होता हैं।

दास प्रथा में 'दास' का कोई मूल्य नहीं था। धनी विलासी लोगों की सेवा करने के लिए एक साधन के रूप में दास था। इनके शोषण की कोई सीमा नहीं थी। इन्हें सवर्ण हिन्दुओं को कुछ भी उनके विरोध में बोलने का अधिकार नहीं था। परंतु इन दासों की तुलना में इन से भी अधिक शोषित शूद्र थे, इनकी पीड़ा, दुख, अन्याय और अत्याचार की दास्ता शब्दों में बयान करने के लिए शब्द भी असमर्थ हो जाते हैं। इनके जीवन की कहानी किसी भी तरह के शब्दों में बयान की जायेगी तो भी सही चित्रण नहीं हो जाएगा। इस तरह की दास प्रथा भारतीय समाज में ईसा पूर्व 200 से 700 ईसा तक अस्तित्व में रही हैं। इस समय दासों की स्थिति शूद्रों की तुलना में अच्छी रही है।

'दास' प्रथा भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में सर्वत्र विद्यमान रही है, परंतु हर समय हर युग में इसका स्वरूप भिन्न रहा है। भारतीय प्राचीन संस्कृति की कुछ प्रथाएँ बहुत ही गहरी थी, जिसके कारण दास प्रथा का प्रभाव रहा है। 300 वर्ष पूर्व अफ्रीका, अमेरिका की दास प्रथा, प्राचीन कालीन इजिप्त, ग्रीस, और भारत की 'दास' प्रथा इसके प्रमाण है। इस दास प्रथा के मूल में

''समाज में आर्थिक, सामाजिक दासता के साथ धर्म अपनी अबाधित सत्ता दृढ़ करता जाता हैं। इस में मानव द्वारा मानव के मानवी मूल्यों को अस्वीकार करके उसकी इच्छा शक्ति को छीन लिया जाता हैं।''[9] सत्ता और धन से रुढ़ि और परम्परा के आधार पर निर्बल का शोषण, उसपर अन्याय, अत्याचार और उनके साथ घृणास्पद व्यवहार किया जाता रहा हैं। दासों का किसी जाति या व्यक्ति का कुचला हुआ अधिकार रहित मूक जीवन 'दलित' संज्ञा का बोध करा देती है। आर्थिक विषमता, परम्परा, अज्ञान, रूढ़ि जाति व्यवस्था का शिकार बना दास एक दृष्टि से 'दलित' शब्द के अर्थ की अभिव्यंजना देता है।''[10]

प्लेटो ने दास की परिभाषा दी है, उसे डॉ. लोखंडे ने 'अस्पृश्य' पर लागू किया है। इन की यह परिभाषा अस्पृश्य पर लागू करने से जो पीड़ित है, जिनपर अन्याय, अत्याचार हुआ है, वे सब अस्पृश्य ही 'दलित' शब्द के अन्तर्गत समाविष्ट किये जाते हैं, उन्हें ही 'दलित' कहा जाता हैं।

प्राचीनकाल से दासों और शूद्रों का जीवन दैन्य और दुख से भरा हुआ है। समाज में सवर्ण वर्ग कमजोर दीन गरीबों पर निरंतर अन्याय, अत्याचार करता आया हैं। गरीब वर्ग इन सवर्ण उच्च वर्ग के लोगों के साथ संघर्ष करने में असमर्थ रहा है। क्योंकि इन्होंने जब भी संघर्ष करने की कोशिश की है, तब उन्हें कुचल दिया गया हैं। इन्हें कुचलते समय इन्होंने परम्परा का सहारा लिया और इन पर अपना वर्चस्व कायम रखा है। प्राचीनकाल से सवर्णों की यही प्रवृत्ति रही हैं। परंतु यही किसी भी तरह से न्यायोचित नहीं है। मनुष्य ने मनुष्य के प्रति मानवियता का व्यवहार नहीं किया है। इसलिए इस संघर्ष में 'अस्पृश्य' कहा जाने वाला समाज सवर्णों द्वारा पिसता रहा है। इन्होंने इस अस्पृश्य समाज को अपने पैरों तले कुचलकर नीरस और निर्जीव बना दिया है। इसी कारण वे सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से दुर्बल रहे हैं। इन्हें जीवन भर अपने मालिक की दया पर निर्भर रहना पड़ा है। ऐसा जीवन जिस समाज का रहा हो, वह दलित की श्रेणी में आ जाता है। सभी प्रकार की सामाजिक शक्तियों ने इनका पूरी तरह से निर्दलन किया है। इस समाज को पूरी तरह से नेस्तनाबूद करके उन्हें मजबूर किया गया और उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर सवर्ण समाज के लोगों ने आजतक अपनी आराम की जिन्दगी गुजार दी है। इस तरह सामाजिक शक्तियों का शिकार और श्रमजीवी वर्ग ही 'दलित' है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि 'दास' और 'शूद्र' में मूलतः अन्तर है, परंतु जो समाज में कुचल दिये गये हैं, वे 'दलित' हैं। शोषण, निर्दलन के शिकार 'दास' और 'शूद्र' दोनों रहे हैं। भले ही दोनों की पीड़ा में अन्तर हो, फिर भी आज इन दोनों को 'दलित' की संज्ञा से अभिहित किया जाता हैं।

दलित साहित्य का विकास मराठी साहित्य से माना जाता है। इसका मूल कारण डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर से चेतना पाकर महाराष्ट्र के दलित समाज ने यह जाना कि उन पर अन्याय, अत्याचार के पीछे भारतीय संस्कृति के वे धार्मिक ग्रंथ ही है जिसके कारण दलितों की स्थिति कुत्ते बिल्ली से भी गई गुजरी रही है। वेद, पुराण, श्रुति उपनिषद, गीता रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि ग्रंथों को भारतीय संस्कृति की आत्मा के रूप में माना जाता है। ये ग्रंथ भारतीय संस्कृति के पोषक रहे हैं। इन्हीं ग्रंथों का आधार लेकर समाज व्यवस्था बनाई गई है, जिसमें केवल एक विशिष्ठ सवर्ण ब्राह्मण समाज का ही हित निहित है। स्वार्थी बुद्धि के सवर्ण समाज ने निम्न वर्ग के गरीब 'अस्पृश्य' दलित कहे जाने वाले समाज का शोषण अनादिकाल से किया है। आज अन्याय, अत्याचार का स्वरूप बदला हुआ दिखाई देता है। एक अलग रूप में अत्याचार और जुल्म किया जा रहा है। धार्मिक कर्मकांडों में फसाकर और चातुरवर्ण की व्यवस्था को ही ईश्वरीय व्यवस्था बताकर मोक्ष जैसी झूठी, भ्रामक कथाओं को गढ़कर इनका शोषण किया गया है। इस तरह से किए जाने वाले शोषण को बुरा न समझकर उसे पवित्र करार दिया गया है। शोषण की इस प्रक्रिया को आध्यात्मिक या ईश्वरीय अर्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया। शूद्रों या दासों को ईश्वर ने ही बनाया है और उनका काम केवल उच्च वर्णियों और ब्राह्मणों की सेवा करना ही है और इनकी इस तरह की सेवा करने से ही शूद्र को इस जीवन से मुक्ति मिलती है, ऐसी मनगढ़ंत कहानियाँ बताकर इनका शोषण किया गया है। इस बात का अहसास सब से पहले मराठी साहित्यकारों को हुआ। तब इन्होंने ऐसे पीड़ित, शोषित समाज को 'दलित' संज्ञा के अन्तर्गत समाविष्ट किया है। आगे चलकर मराठी साहित्यकारों ने दलित शब्द को परिभाषित करने की कोशिश की है।

''दलित शब्द डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के Depressed का हिन्दी अनुवाद है। 'दलित' या 'डिप्रेस्ड' दोनों ही समानार्थी शब्द है, जिनमें शोषित, उपेक्षित, दबे–कुचले और दमन के शिकार व्यक्ति अथवा वर्ग शामिल है।''[11]

लक्ष्मण शास्त्री जोशी दलित के संदर्भ में कहते हैं– ''दलित मानवीय प्रगति में सबसे पीछे धकेल दिया गया सामाजिक वर्ग है।'' ऐसा मानते है जब कि डॉ. म.ना. वानखेडे कहते हैं– ''जो दबे हुए श्रमजीवी है वे सब दलित की व्याख्या में शामिल होते हैं।'' गोविन्द शंकर वाघमारे के अनुसार ''दलित उसे कहते हैं जो आर्थिक रूप से अत्यन्त दबा हुआ है, इस समाज व्यवस्था में सबसे नीचे रहने वाला कमजोर वर्ग दलित समझा जाता है।''

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज के सर्वाधिक दुर्बल, उपेक्षित, सर्वहारा, तिरस्कृत, शोषित, दमित, मसला हुआ, रौंदा हुआ, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और अन्य मानवीय अधिकारों से वंचित वह वर्ग जिसे सामाजिक न्याय नहीं मिल पाया हैं, ऐसे भारतीय समाज को दलित की श्रेणी में समाविष्ट किया जा सकता है।

1-2 nfyr 'kCn dk 0;RifRreyd vFk

साहित्य के विद्वानों में दलित शब्द को लेकर अनेक प्रकार के मतभेद देखने को मिलते हैं। इसलिए 'दलित' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ समझने पर सही दलित शब्द का अर्थ समझने में आसानी हो जाएगी। 'दलित' शब्द के पूर्व इसे विभिन्न नामों से जाना गया हैं। ''वैदिक काल एवं स्मृति काल की वर्णव्यवस्था और जाति व्यवस्था से गहरा संबंध रहा है। वर्ण व्यवस्था से शूद्र जातियों, उपजातियों का विकास हुआ है। तत्पश्चात इनको 'चाण्ड़ाल', 'अस्पृश्य', 'अछूत', 'हरिजन' आदि अनेक नामों से पुकारा गया हैं।''[12] इनके साथ समाज और राजसत्ता ने जो व्यवहार किया है, वह बहुत ही दर्दनाक है। प्राचीन काल से इसे रोकने का प्रयास समय–समय पर समाज सेवकों ने किया हैं। आज इसी समाज को एक नये शब्द 'दलित' समाज के रूप में जाना जाता है। दलित अवधारणा को समझने के लिए दलित शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ समझना आवश्यक है। फिर दलित और दलित साहित्य की अवधारणा स्वयमेव स्पष्ट हो जाएगी। 'दलित' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु 'दल' से हुई। जिसका अर्थ फटना, खंडित होना, द्विधा होना है। 'संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर' में डॉ. रामचंद्र वर्मा ने 'दलित' का अर्थ 'विनष्ट किया हुआ, मसला हुआ, मर्दित, दबाया हुआ, रौंदा या कुचला हुआ, खण्डित, विनष्ट किया हुआ' ऐसा दिया है। इस आधार पर दलित किसे कहना चाहिए यह बात स्पष्ट हो जाती है।

1-2-1 nfyr 'kCn dh O;qRifRr

सर हरसिंग और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बीच 'दलित वर्ग' 'अस्पृश्य वर्ग' विषय पर 23 अक्टूबर 1928 को चर्चा हुई थी। तब डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने 'अस्पृश्य वर्ग तथा 'दलित वर्ग' को समान अर्थ में ग्रहण किया है।

''स्वयं डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने 'अस्पृश्य' शब्द के लिए डिप्रेस्ड क्लासेज या अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग किया है। 'दलित' शब्द का प्रयोग बहिष्कृत भारत के 16 नवम्बर 1928 के अंक में पहली बार हुआ है। प्रासंगिक विचार कॉलम में यह 'दलित' शब्द चार बार आया है।''[13] यह कॉलम डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने स्वयं लिखा है। इनके बाद 1928 में पा. ना. राजभोज ने अपने पाक्षिक का नाम 'दलित बंधु' रखा। इस के बाद 'जनता' नामक पत्रिका के 30 दिसंबर 1939 के अंक में मुक्ति दिन के निमित्त से डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने जो भाषण किया था, वह इस पत्रिका में छपवाया गया था। इस में भी 'दलितांची अवहेलना' 'दलितांची दुःखे' इस तरह के शब्द प्रयोग स्वयं डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने किया है।''[14] 1948 को मुंबई में 'दलित सेवक साहित्य संघ' की स्थापना हुई। 28 फरवरी 1955 के आप्पा साहेब रणपिसे 'दलित' साहित्य की अनास्था' हेडलाईन के दो लेख 'जनता' और 'जयभीम' साप्ताहिक में प्रकाशित हुए। यह दलित शब्द 1953 के पहले काफी जगह पर आया है। 1 मार्च 1958 को 'प्रबुद्ध भारत' का दलित साहित्य विशेषांक प्रकाशित हुआ।''[15]

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'दलित' शब्द का जन्म डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा प्रयोग के कारण ही हुआ है। इस शब्द का निर्माण 16 नवंबर 1928 में ही हुआ है और 1950 के बाद यह दलित शब्द सब तरफ प्रयोग में लाया जाने लगा। इसलिए अब दलित शब्द को लेकर विवाद की कोई गुंजाईश नहीं है।

1-2-2 nfyr dk rkRi;

'दलित' मराठी, गुजराती, हिन्दी और लगभग भारत की सभी भाषाओं का एक प्रचलित शब्द है, जिसका अर्थ है; गरीब और उत्पीड़ित। लेकिन सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक संदर्भो में 'दलित' शब्द को एक भिन्न सांस्कृतिक अर्थ मिल जाता है। आन्दोलन और साहित्य के साथ 'दलित' शब्द

जोड़ने से फौरन एक भिन्न विचार, एक अलग सोच और एक अलग समझ का संप्रेशन हो जाता है। इस विशिष्ट अर्थ में इस शब्द का सबसे प्रथम प्रयोग डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के नवबौद्ध अनुयायियों ने सन सत्तर के दशक की शुरुआत में किया। इस 'दलित' शब्द में अन्तर्निहित था कि, ''जिसे तोड़ दिया गया है और जिसे अपने सामाजिक दर्जे से ऊपर बैठे लोगों ने जानबूझकर नियोजित रूप से कुचल डाला है। इस शब्द में छुत–अछूत, कर्म सिद्धान्त और जातिगत श्रेणी क्रम का नकार निहित है।''[16] दलित शब्द का अर्थ है, 'दबाया हुआ, कुचला हुआ, समाज में वर्ग बहुत दिनों से सताया हुआ है, वह दलित वर्ग है। ''दलित वर्ग का प्रयोग हिन्दू समाज व्यवस्था के अन्तर्गत परम्परागत रूप से शूद्र माने जाने वाले वर्गों के लिए रुढ़ हो गया है। दलित वर्ग में जो जातियाँ आती हैं वे सभी निम्न स्तर पर है।''[17]

'अछूत' 'हरिजन' और 'दलित' ये किसी जाति के नाम नहीं है बल्कि एक वर्ग के नाम है। ये शब्द एक लेबल के समान प्रयोग में लाए गए हैं, जो इनके जीवन की शोषित, घृणित, दमित और कुचले हुए दिनों की याद दिलाते हैं और उनके चिन्तन को आन्दोलित करते हैं। जैसे 'अछूत' के साथ जड़ एवं हीन 'हरिजन' के साथ संवेदनशील और नाजुक तथा दलित' के साथ विस्फोटक व ज्वलनशील ऐसे निर्देश इन शब्दों से जुड़े हुए मिलते हैं या चिपके हुए दिखाई देते हैं।

दलितों का यह 'जड़' से 'ज्वलनशील' तक का सफर बहुत ही यातनाओं से भरा हुआ हैं, यह एक उपलब्धि है। दलित शब्द से इनके शोचनीय स्थिति का बोध होने के कारण वे आन्दोलन करने की ओर प्रवृत्त हुए और अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने लगे हैं। जैसा कि अब्राहम लिंकन ने कहा है कि ''एक दास को कहो कि वह दास है, तो वह विद्रोह कर देगा।'' इसी बात को कार्ल मार्क्स ने कहा है कि ''किसी गुलाम को यह अहसास होने पर कि ''उसके पास गवाने को कुछ भी नहीं सिवाय बेड़ियों के, क्रांति होगी।'' आगे चलकर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर कहते हैं कि ''गुलामों को यह अहसास करवा दो कि वह गुलाम है तो वह गुलामी की जंजीरों को तोड़ देगा।''

इससे स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इस वर्ग के 'जड़' से 'ज्वलनशील' तक पहुँचने में इसके तत्कालीन नामकरण करने वालों ने 'अछूत' कहकर पुकारा तब उनकी भावना नफरत की थी। आगे चलकर गांधीजी ने